वो दिन बारिश हो रही थी। ३ बारिश के उस रात, घर के आगे एक गाड़ी आकर खड़ी हुई। उस गाड़ी से आरोही उतर गई। गाड़ी की आवाज सुनकर घरवाले बाहर आए। आरोही ने भाग के आकर दादा को झप्पी दी। दादा उसे देखते बहुत खुश हो गए। सब एक साथ अंदर चले गए। आरोही के पापा ने पूछा "बेटा तुमने तो हमे डरा ही दिया। आठ बजे को आनेवाली थी, फिर नौ कैसे हो गया।" आरोही ने कहा "अरे पापा ट्रेन लेट हो गया इसलिए मुझे तकलीफ हो गई"। दादी ने कहा "ठीक है बेटा, पहले जाकर नहाके आ जाओ, फिर बात करेंगे।" दादी आरोही के साथ अपना कमरा दिखाने के लिए साथ गई।

आरोही ने दादी से अपने मौसी के बारे में पूछा। "अरे दादी, मौसी किधर है, कितने साल हो गए मौसी सैम से मिलकर। मैंने सबको देखा उनके सिवाय, वो कहा है?" दादी के आँख भर गए। कुछ बिना बोले वो वहाँ से चली गई।

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 642 Participant Code: 104

आरोही ने मन मे सोचा की दादी को क्या हुआ, अचानक उनके आँख क्यों भर गए। यह सोचते हुए वो नहाने गई। दादी गीले आँखो से नीचे आई। ~~उन्होंने~~ दादी बोली "आरू अपने मौसी से मिन मिलना चाहती है, मैं क्या कहूँगी उससे?" आरोही के पापा बोलते है - "अब कोई फैदा नहीं, हमे उससे सब बोलना ही होगा, अब हम कितने दिन से बात उससे छिपाकर रखे। कभी न कभी वो सब जानेगी, तब हम क्या बोलेंगे? पता नहीं की यह सुन्ने सुनकर वो कैसे सेह ~~पाएगी~~ सकेगी?" सब आरोही का इंतेज्जार कर रहे थे। थोडी देर के बाद आरोही आ गई। पापा ने उस से सब ~~बताने~~ बताया

गुजरात के एक सुंदर से गाँव में यह लोग रहते है। आरोही, आरोही के पापा, मम्मी, दादा, दादी, मौसी और उनके पति रवि। आरोही की माँ उसके जन्म पर ही उन्हें छोडकर चली गई। उनके मरने पर आरोही का

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

ख्याल उसके मौसी ने रखा था। दिन रात मौसी अपने बेटी की तरह आरोही को खाना देती है, खिलाती है, उसके रोने पर उसे शांत करके सुलाती है। मौसी आरोही को बहुत पसंत करती है। एक माँ का सारा प्यार वो उसे देती है इसलिए आरोही भी मौसी को अपने माँ के स्थान पर देखती थी। आरोही के चार साल में उसे पढ़ाई के लिए बाहर भेजना पड़ा। उसके कारण आरोही चली गई और बहुत साल तक नही आई। आरोही के जाने के एक साल बाद मौसी ने एक लड़के को जन्म दिया। सबने बहुत खुशी से उस बच्चें को खिलाया और उसकी देखभाल की। उन्होंने उस बच्चे को एक अच्छा नाम दिया - दीपक। मौसी बहुत खुश थी क्योंकी आरोही के जाने के बाद वह खुद अकेलापन महसूस कर रही थी। एक दिन जब रवि दीपक को पाँच साल था, रवि और दीपक फल खरीदके घर लौट रहे थे की ~~एक~~ अक गाडी पलट के दोनो के सिर में गए और उन दोनों की जान चली गई। सबने मिलकर उनको अस्पताल

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

पहुँचाया लेकिन देर हो गई थी। उसके कारण उन्हें बचा नहीं पाए।

घरवालें यह सुनकर बहुत दुःख हो गए। वह एकसाथ मौसी से ये खबर बोले। यह सुनते ही मौसी चिल्लाने लगी- रवि...., बेटा दीपक, तुम मुझे अकेला छोडकर नही जा सकते, मैं अब कैसे जियूँ..." यह कहते ही मौसी ने खुदको कमरे में बंद कर दिया। दरवाज़े में बहुत ठोका और चिल्लाया फिर भी नहीं खोला। दो दिन बाद दरवाज़े को तोडकर वे अंदर गुज़े। मौसी नीचे ~~बेहोश~~ पडी थी। उन्होंने जल्दी से उसे ~~उठाकर~~ उठाकर अस्पताल पहुँचाया। उस दिन के बाद मौसी ने फिर कभी भी आँखे नहीं खोले। सोलह साल हो गए, उसने अभी तक आँख नही खोला।

यह सब सुनके, आरोही के आँख भर गए, वह ~~अपने आँसु~~ खुदको रोक नहीं सकी। "पापा मुझे अभी ले चला, मुझे मौसी से मिलना

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

है, वो मुझे देखकर खुश होगी, मैं जाऊँगी तो वो जरूर आँखे खोलेगी, वो मुझे जरूर देखेगी, मेरा विश्वास कि कीजिए, मुझे ले चलो।" वो टूटकर रोने लगी। पापा और आरोही घर से निकल रहे थे की आरोही ने बगीचे पर एक सूखा पौधा देखा जिसमें सिर्फ दो पत्ते थे। उसने इसके बारे में पापा से पूछा। पापा ने कहाँ की "यह पौधा मौसी, रवि और दीपक ने एक साथ रखा था। ~~अं~~ उनके उन दोनो के मरने के बाद, यह पौधा धीरे धीरे सूखने लगा और इसके पत्ते एक एक करके गिरने लगे। समय के साथ साथ इसके सारे पत्ते गिर गए और अब बस दो बचा है।" यह सुन ने पर आरोही थोडी डर गई, उसने मन मे ~~खु~~ कुछ सोचा और जल्दी अस्पताल जाने की जिद की। वह दोनो अस्पताल पहुँचे। आरोही ~~के~~ मौसी के पास जाकर भरे आँखो से बात की, "मौसी, मुझे देखो ये मैं हूँ, आपकी आरू। बस एक बार मुझे देखो, मैं आपसे मिलने आई हूँ।" आरोही ने मौसी को ध्यान से देखा, अब मौसी

पहले की तरह नहीं दिखती है। वक्त के साथ साथ मौसी बहुत पतली हो गई, उनके आँख अंदर चले गए। आरोही ने मौसी का हाथ पकड़ा। उसे ठंड महसूस हुआ। अचानक मौसी कुछ बोलने लगी। मौसी ने धीरे से कहाँ की "उस पौधे का आखरी पत्ता गिर गया, अब मुझे भी जाना है। समय हो गया।" यह कहते ही मौसी का हाथ छूट गया। आरोही का दिल दुःख से कापने लगा और उसने आखरी बार अपने मौसी के सिर पर चुम्मा देकर दौड कर चली गई।

उसने घर पहुँचकर देखा तो वो आखरी पत्ता गिर गया था।